A Unit of Global Hospital & Research Centre

जीवन सौरभ

Shivmani Geriatric Home

Apr - June 2020
Volume 21

अंदर देखिए

एकता में शक्ति ...1
सच्चे सुख की अनुभूति ...2
विशेष एक्टिविटी ...3
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस ...3
मातेश्वरी जगदंबा सरस्वती जी को स्नेहमयी भावांजलि ...4
मातेश्वरी की आवश्यकता ...4
दिव्य दर्पण ...5
समय की पुकार ...6

एकता में शक्ति

संगठन में ही शक्ति है, एकता में ही बल है। वास्तव में देखा जाए तो संगठन व एकता, यह दोनों शब्द ही एक दूसरे के पूरक हैं, एकता है तो संगठन है और संगठन में एकता का बल होने से सहयोग का भी बल होगा तो सफलता भी सहज हो जाएगी उदाहरण के तौर पर पांच उंगलियां मिल कर ही हाथ बनाती है। हाथ के पंजे में रचनात्मक शक्ति है, वह कारीगर है, वह मज़दूर है, वह लेखक है, वह चित्रकार है, वह अध्यापक है, वह सैनिक है। अलग-अलग उंगलियों की शक्ति जब आपस में मिल जाती है तो कला निखर जाती है। समाज का विकास इसी भावना से हुआ उस का अस्तित्व इसी भावना

पर टिका है। एक दूसरे के लिए ही मानव मूल्यों और सामाजिक परंपराओं का विकास हुआ। त्याग, सहयोग, दान- पुण्य धर्म- कर्म की मान्यताएं विकसित हुई। क्योंकि जहां संगठन है वहां सुख है और जहां बिखराव है वहां कलह है, दुःख है, भय है, संशय और असुरक्षा है। यदि देखा जाए तो परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई है। इस इकाई का आधार एकता का सिद्धांत है। एकता का अर्थ ही रचनात्मक सामूहिकता है। जिस एकता में सृजनात्मक और रचनात्मक मूल्यों की अनदेखी की जाए वह एकता विनाशकारी शक्तियों और प्रवृतियों का ही पोषण करती है। यह एकता समाज के लिए और व्यक्ति विशेष के लिए घातक सिद्ध होगी। एकता का अर्थ कदापि नहीं कि हम सामाजिक नियमों का सामूहिक उल्लंघन करें, कानूनों को अनुचित ढंग से तोड़े और समाज में अराजकता फैलाएं या अनुशासन हीनता का वातावरण तैयार करें। आजकल प्रायः देखने में आता है कि 'एकता' शब्द को कुछ स्वार्थी लोग केवल निजी स्वार्थों के लिए प्रयुक्त कर रहे हैं और आन्तरिक एकता के सूत्रों को तोड़ रहे हैं। एकता तो ऐसी पवित्र शक्ति है जो मानव मात्र के कल्याण के लिए सज्जनता के सिद्धांत पर टिकी है, उसकी स्थिति मानव ह्रदय में स्वभाविक रुप से बनी हुई है।

तो इसी एकता की शक्ति से संगठन में एक दूसरे का सहयोग कर एक दूसरे को आगे बढ़ाते रहना है और आगे बढ़ मंजिल को प्राप्त करते रहना है।

बी.के. ओम भाई,
प्रोजेक्ट मैनेजर,
शिवमणि होम

सच्चे सुख की अनुभूति

हम सब की चाहत होती है कि सदा सुख मिले, दुख न हो। सुख पाने के लिए पहले यह जानना होगा कि सच्चा सुख किस में है, हम उसे कैसे पा सकते हैं। सुख किसी बाहरी चीज में प्राप्त नहीं किया जा सकता। कुछ देर पहले जिस चीज के मिल जाने पर अपार खुशी हो रही थी, थोड़ी देर बाद वह खुशी उतनी नहीं रह पाती। हमारा मन किसी अन्य में सुख तलाशने और उसे पाने को करने लगता है। पर वस्तु के मिल जाने के बाद मन वहां टिका नहीं रह पाता। इस तरह हमारे जीवन में कृत्रिमता, आडंबर, संग्रह और ताकत की होड़ शुरू हो जाती है। ऐसे में हमें कष्ट और दुख भोगना पड़ता है। एक बार एक शिष्य ने गुरु से पूछा- 'सुख पाने के लिए कहां जाऊं ?' गुरु ने उत्तर दिया-'सुख बाहर नहीं, तुम्हारे भीतर से मिलेगा।' अर्थात स्थाई सुख तब मिलता है, जब हम अपने जीवन में ईश्वर प्रदत्त शक्तियों का जो कि हमारे अंदर ही निहित हैं, लेकिन सुप्त अवस्था में हैं तो उन्हें जागृत कर उनका सदुपयोग करना सीख जाते हैं। बिना पुरुषार्थ किए कोई सिद्धि नहीं मिलती। कठिनाइयों का बहाना लेकर हाथ पर हाथ रख बैठे रहकर सुख नहीं मिलता। कभी मिल भी जाए तो स्थाई नहीं रहता। जीवन में अपमान, हानि, रोग, मृत्यु आदि का भय ही हमें सुखी नहीं होने देता। हमारा संपूर्ण जीवन इन्हीं के भय में बीत जाता है। भय मन को बार-बार विचलित करता रहता

है। हमें भय व निराशा के स्थान पर उत्साह को जगाना होगा। अपने आप को हीन मानकर अपनी स्थिति दयनीय न बनाकर उमंगउत्साह वाले व्यक्तित्व का निर्माण करना होगा। जीवन के प्रति आस्था, उत्साह और विश्वास हमें सुखी बनाए रखते हैं। घृणा, क्रोध, चिंता, ईर्ष्या, द्वेष, क्लेष हमारे अंदर मानसिक विकलांगता पैदा कर दुख देते रहते हैं। जिसका स्वभाव सहज-सरल होता है वह हर जगह सम्मान पाता है। जीवन को सुखी बनाने के लिए चरित्र का बड़ा महत्व है। सच्चरित्रता मानवता की प्रतीक है। चरित्र की प्रौढ़ता वा परिपक्वता मन को संबल देती है, चरित्र ही सच्चा धन है। चरित्र पर दृढ़ रहने से मनोबल बढ़ता है। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी हिम्मत न हारकर आगे बढ़ने का साहस बना रहता है। हमारा जीवन अनेक संस्कारों से बंधा होता है। ये अच्छे भी होते हैं और बुरे भी। शुभ कर्मों से ही शुभ संस्कारों का सृजन होता है और बुरे संस्कार कटते हैं। जो अपने मन को अनुशासित रखने में सफल होते हैं, वे हमेशा सुखी रहते हैं। हमारा सबसे बड़ा शत्रु है क्रोध। क्रोध हमें विचारशून्य और कमजोर बना देता है। एक और बड़ी बाधा सुख के रास्ते में है, और वह है असंतोष। हमें जितना भी मिल जाए, हम तृप्त नहीं होते। संतोष का अर्थ है-तृप्त होना। मन तृप्त होगा तो किसी वस्तु का अभाव नहीं खलेगा। ऐसे में इंसान सदा सुखी ही रहेगा। लोग सफलता से सुखी होते हैं और विफलता उन्हें दुखी कर देती है। सुखी रहने के लिए हर हाल में एक दूसरे के प्रति सम्मान की दृष्टि विकसित करनी होगी। जहां उद्यम, पराक्रम, धैर्य और साहस है, वहां दुख ठहर ही

नहीं सकता। इसलिए यदि सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाएं तो संकट की घड़ी में भी सुख की अनुभूति हो सकती है।

बी.के. विजय बहन,
डिप्टी मैनेजर,
शिवमणि होम

विशेष एक्टिविटी

7 अप्रैल को शिवमणिहोम निवासियों के लिए बी.के. शकुंतला बहन के द्वारा 'भविष्य में गुणों की आवश्यकता' विषय पर वर्कशॉप कराया गया। जिसमें कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं को लेकर ज्ञान चर्चा की गई, जैसे सभी को आने वाले समय में किन किन गुणों का स्टॉक कार्य में लगाना पड़ेगा और माया की कौन कौन सी परीक्षाओं के बीच इन गुणों की आवश्यकता पड़ सकती है। सभी के द्वारा विभिन्न गुणों का विश्लेषण किया गया तथा निष्कर्ष निकाला गया की सबसे अधिक जिन गुणों की आवश्यकता होगी, वह है- निश्चय बुद्धि का गुण, परखने का, सहनशक्ति, धैर्यता, नम्रता, आत्मविश्वास, निर्माणचित्त व शुभ भावना आदि। ऐसे विभिन्न गुणों का उल्लेख किया गया। इन विभिन्न गुणों को जीवन में धारण करने के लिए क्या विशेष पुरुषार्थ करना पड़ेगा तथा गुणमूर्त बनने की विधि पर सभी ने अपने अपने विचार व्यक्त किए एवं सभी ने सक्रियता से स्वचिंतन व निरीक्षण कर इस वर्कशॉप में भाग लिया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

21 जून अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के दिन शिवमणि होम निवासियों के द्वारा शारीरिक व्यायाम के साथ-साथ सारे विश्व में शांति के प्रकंपन फैलाने के लिए संगठित योग का भी आयोजन किया गया जिसमें सभी ने उमंग-उत्साह से भाग लिया।

मातेश्वरी जगदंबा सरस्वती जी को स्नेहमयी भावांजलि

मम्मा दिव्यगुणों की सम्पूर्ण साक्षात देवी थी। उनके संकल्प चट्टान की तरह अडिग, बोल मीठे तथा सारयुक्त और कर्म श्रेष्ठ तथा युक्तियुक्त थे। मम्मा इतनी योगयुक्त, गंभीर और शांत रहती थी कि उनके आस-पास के वातावरण में सन्नाटा छाया रहता था जो सभी को प्रत्यक्ष महसूस होता था। ऐसा लगता था कि मानो वह कोई चलता-फिरता लाइट हाउस और माइट हाउस हो। मम्मा की चाल फरिश्तों जैसी थी। मम्मा के बोल बहुत ही मधुर, स्नेहयुक्त और सम्मान-पूर्ण होते थे। पत्र द्वारा या व्यक्तिगत मिलने पर वह सबसे पहले शारीरिक तबीयत का हाल-चाल अवश्य पूछती थी। उस अलौकिक माता का बच्चों से जितना असीम प्यार था उतना किसी लौकिक माता का क्या होगा? तो ऐसी प्यारी रूहानी मां को शिवमणि होम के निवासी स्नेह पुष्पांजलि अर्पित करते हैं एवं उनके द्वारा दी हुई शिक्षाओं को आत्मसात कर जीवन में धारण करने का दृढ़ संकल्प करते हैं।

मातेश्वरी की आवश्यकता

पड़ी जरूरत हम बच्चों को, आज तेरी गोदी होती,
आज तू मम्मा होती, आज तू मम्मा होती..

जीव घात करते हैं बालक,
डिप्रेशन से हुए हैं घायल,
ज्ञानदीप तू दिखा कर उनको,
फिर से नई रोशनी देती
आज तू मम्मा होती..

कन्या भ्रूण खत्म नहीं होता,
ज्ञान आज तू मां देती,
एक-एक बाला लक्ष्मी दुर्गा बन,
राष्ट्र सुरक्षित कर देती,
आज तू मम्मा होती..

फिर ना कहीं वृद्ध आश्रम होते,
मात पिता को देव समझते,
जगे जगाए दीप मणि को,
और ज्ञान घृत भर देती
आज तू मम्मा होती..

बी.के. मनोरमा मिश्रा
शिवमणि होम
रूम नंबर 119

दिव्य दर्पण

1 मेरे लौकिक परिवार की पृष्ठभूमि धार्मिक थी। मैं भक्ति के कर्मकांड, रीति- रिवाज़ एवं अन्य नियमों का पालन भी अत्यंत दृढ़ता से करती थी। जब मेरे माता पिता ने शरीर छोड़ा, तब हमारे गांव में एक अध्यापक आए थे। उनका पूरा परिवार ज्ञान में चलता था और उन्हें ज्ञान का बहुत नशा था। उस समय मैं सिलाई का काम करती थी। उन्होंने मुझे ज्ञान की बातें बताईं, मुझे अच्छा लगा और मैं सेंटर में गई तो बाबा का लाल लाइट का चित्र सामने था और उसके सामने बैठने के बाद मुझे बहुत शांति की अनुभूति हुई और मेरी आंखों से आंसू बहने लगे तो टीचर बहन ने कहा कि आप 7 दिन का कोर्स करने के लिए आओ। लेकिन मुझे इतना निश्चय हो गया कि मैं रोज मुरली सुनने जाने लगी और उस दिन से ही बाकी सारी धारणाएं भी शुरू कर दीं और तब से आज तक एक दिन भी मुरली मिस नहीं की। उसके बाद हर साल बाबा से मिलने मधुबन आने लगी और सेवा में 6 महीने रुकने लगी। एक बार मुरली के नीचे सूचना में आया कि जिनको भी सिलाई का काम आता है वह सेवा में आ सकते हैं। तब मैंने अपना लौकिक घर-बार सब कुछ समेटकर पूरा निश्चय कर मैं मधुबनी चली गई, लेकिन जब 6 महीने पूरे हुए तो निमित्त भाई ने बोला कि अब तो 6 महीने हो गए, अभी आप घर जा सकते हो। उसी दिन ही बाबा ने मुरली में मरजीवा बनने को कहा था, उसी समय ही मन में संकल्प आया कि मुझे मरजीवा भोग लगाना है और मधुबन में ही मरजीवा भोग लगवाया। उसके बाद निमित्त भाई ने मुझसे कहा कि आप का संकल्प इतना पावरफुल है आप जो संकल्प करेंगे वह अवश्य पूरा होगा। फिर वहां से मैं बाबा के सामने संकल्प करके रानीवाड़ा सेंटर पर 2 महीने सेवा के लिए गई और जब वापस पांडव भवन में आई तो निमित्त भाई ने कहा शिवमणि होम में सेवाधारी की आवश्यकता है, आप जाएंगे? तो मैंने तुरंत ही हां जी का पार्ट बजाया और शिवमणि होम में पहुंच गई और तब से अब तक यहां ही बाबा की सेवा में रत हूं। यहां का वातावरण एवं ब्राह्मण परिवार बहुत सहयोगी है और मैं दिल से बाबा को शुक्रिया करती हूं कि मुझे अपने घर में ही रख लिया जो मुझे दोबारा लौकिक में जाने की कभी आवश्यकता ही महसूस नहीं हुई और जाने की जरूरत भी नहीं पड़ी। यहां के सभी ब्राह्मण वत्सों एवं प्रशासन को भी मैं दिल से बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूं। और मन यही गीत गाता है वाह बाबा वाह, वाह ब्राह्मण परिवार वाह।

बी.के. रतनप्रभा
शिवमणि होम
रूम नंबर 131

2 जिस तरह से भटकते हुए पथिक को सही और सच्चा रास्ता मिल जाता है, उसी प्रकार से मुझ जैसे भटकते पथिक को परमात्मा का सत्य परिचय मिल गया। बचपन से ही परमात्मा को ढूंढने की चाह रही और हमारे गांव में भी शिव जी का स्वप्नेश्वर महादेव का अत्यंत सिद्धिस्वरूप मंदिर था, जहां पर दूर-दूर से लोग अपने मन्नतें मांगने आते थे और वहां पर आने से सर्व की इच्छाएं पूर्ण होती थी। इसलिए शिवजी बाल्यकाल से ही मेरे आराध्य रहे। बचपन में संग के रंग की वजह से मुझे कुछ बुरी आदतें लग गई थीं जैसे नॉनवेज खाना, सिनेमा देखना आदि। पढ़ाई में मन नहीं लगता था-क्योंकि पारिवारिक समस्याओं की वजह से थोड़ा अलबेलापन आ गया था। लेकिन परमात्मा के प्रति मेरा जो विश्वास था वह 1995 में फलीभूत हुआ, जब मैं उड़ीसा के

भुवनेश्वर शहर में आया और खुद के पैरों पर खड़े होने का अवसर प्राप्त किया। वहां ही मेरे एक दोस्त के बड़े भाई ईश्वरीय ज्ञान में चल रहे थे और थोड़ा थोड़ा हमें भी ज्ञान सुनाते थे और मुझे वह ज्ञान सुनना अच्छा लगता था और एक बार 7 दिन का कोर्स करने के लिए हमें कहा तो परमात्मा के प्रति स्नेह होने के कारण मैं सेंटर पहुंचा और जब 7 दिन का कोर्स किया तो मुझे परमात्मा पर पूरा निश्चय हो गया और जो थोड़ी बुरी आदतें थीं फिर वह भी छूट गई और कई पारिवारिक समस्याओं का भी मन के शक्तिशाली होने के कारण निवारण हो गया। बाहर की दुनिया में भी रहते ईश्वरीय मर्यादाओं एवं नियमों का दृढ़ता से पालन करने लगा और बाबा के सामने एक संकल्प रखा कि बस बाबा अब मुझे मधुबन में सेवा ही करनी है और बाबा ने वह संकल्प भी पूर्ण कर दिया और मुझे शिवमणि होम में सेवा करने का सुनहरा अवसर मिला। कई परिस्थितियां भी आईं लेकिन जब सर्वशक्तिमान परमात्मा साथ है तो हर असंभव कार्य भी संभव होता गया। बाबा ने मुझे एकनामी और इकोनामी का जैसे अवतार बना दिया। मेरे बोल-चाल, रहन-सहन, चाल- चलन खान- पान सब में परिवर्तन आ गया। परमात्मा ने मुझ पत्थर को तराश कर हीरे जैसा बना दिया। अब मेरे मन में कुछ भी आश नहीं है, क्योंकि बाबा ने कहा है खाली हाथ आए थे और खाली हाथ जाना है। यहां का बैंक-बैलेंस, गाड़ी-बंगला, महल-माड़ियां कुछ साथ चलने वाला नहीं है। हमारे साथ चलेंगे तो हमारे पुण्य कर्म एवं दुआओं का खाता। बाबा ने अभी ही मुझे बेगर टु प्रिंस बनने का पूर्ण निश्चय करा दिया। बस यही एक आश बाकी है अंत तक बाबा की सेवा करते रहें एवं किसी से सेवा ना लेनी पड़े। बाबा के लिए दिल से बहुत-बहुत शुक्रिया निकलता है, शुक्रिया बाबा शुक्रिया।

बी.के. प्रमोद
शिवमणि होम
रूम नंबर 133

समय की पुकार

समय की है पुकार , अब जाग,
अब जाग,
व्यर्थ संकल्प-विकल्पों के पीछे,
मत भाग, मत भाग...
स्वयं परमपिता परमात्मा आए तुझे जगाने,
लेकिन माया लगी है तुझे कुंभकरण की तरह सुलाने।
परमपिता से प्रीत लगा जीवन सुखमय बना ले,
आलस्य-अलबेलेपन, बहानेबाजी में अनमोल घड़ीयां न गंवाले।
समय रहा पुकार तुझे अनदेखा न कर,
चिड़िया चुग जाएगी खेत, ज़रा विचार कर।
समय की स्पीड तेज है भागना पड़ेगा तुझे,
डबल लाइट बन हाई जंप देना है तुझे।
परमात्मा साथ है तेरे ना घबराना,
लास्ट सो फास्ट जाकर है दिखाना।
पांचों विकारों का शीघ्र करो निष्कासन,
समय के साथ प्रभु का भी है निवेदन।
समय की पुकार सुन,
अब जाग अब जाग,
माया के पीछे मत भाग,
अब मत भाग...

बी.के. डॉ. मनीषा की कलम से....

"यदि गुलाब की तरह
खिलना चाहते हैं,
तो काँटों के साथ तालमेल
की कला सीखनी होगी।"

SHIVMANI GERIATRIC HOME
(Project of Global Hospital & Research Centre)
Near Global Hospital Trauma Centre
Taleti, Abu Road, Dist Sirohi
Rajasthan (India) - 307 510
9414092383; 9413372922 (Mobile)
9414037045; 9875050933 (Manager)
E-mail : shivmani.opk@gmail
Website : www.shivmani.org

Feedback

Valuable feedback and information may be emailed at
shivmanihome@gmail.com